व्यंग्य

चंद्रमा की सच्ची कथा

-रवींद्रनाथ त्यागी

जैसा कि हममें से मेरे जैसे कुछ सयाने जानते होंगे, चंद्रमा हमेशा इस तरह निर्जन और वीरान नहीं था। एक समय था कि वहां बड़ी रौनक थी। वहां बड़ी खूबसूरत स्त्रियां निवास करती थीं। रेस्तरां, बोटिंग क्लब और सालाना ब्यूटी परेड वगैरह भी होते थे। बस, कुछ ऐसा हुआ कि एक दिन चांद को किसी के लिये बरबाद होना पड़ा। यह एक लम्बी कथा है, मगर खुशी की बात यह है कि मैं बड़ी बात को छोटा करना भी जानता हूं।

केशवदास को किसी चंद्रमुखी ने एक बार बाबा कह दिया तो महाकवि को उदासी का दौड़ा पर गया। कुऐं से हटकर घर जो आए तो लगे च्यवनप्राश का नुस्खा ढूंढने। चांद की विजय के बाद इधर स्थिति यह हो गई है कि कवि केशव अब यदि किसी मृगलोचनी को चंद्रमुखी कह दें तो जूते खाने को मिलें। चांद पत्थर का एक बदसूरत टुकड़ा है जिसकी सतह पर काफ़ी गहरे गड्ढे हैं। कौन युवती चाहेगी कि उसे अब चांद कहकर पुकारा जाय। 'मुख मयंक सम मंजु मनोहर' तथा 'इंदु' मुख पर साथ ही' वाली कविता के दिन अब लद गए। कालिदास के विदूषक ने दुष्यंत से कहा था कि चांद एक लड्डू है जिसको कि वह खाना चाहता है। वह गरीब अब जिंदा होता तो पता लगता कि वह नाश्ते में क्या मांग रहा था। चांद का रोमांस खत्म हो गया। चकोर की चाह अब केवल पागलपन रह गई। पाताल लोक के तीन प्राणी गए और चांद की भूमि का नमूना ले आए। चांद पर कुछ भी नहीं मिला। सच, कुछ भी नहीं। न खरगोश खिलाती परियां, न चरखा कातती बुढ़िया और न सितार बजाती चीन की शहजादी। खटमलों की जो आशा थी, वे भी नहीं मिले। खैर।

जैसा कि हममें से मेरे जैसे कुछ सयाने जानते होंगे, चंद्रमा हमेशा इस तरह निर्जन और वीरान नहीं था। एक समय था कि वहां बड़ी रौनक थी। वहां बड़ी खूबसूरत स्त्रियां निवास करती थीं। रेस्तरां, बोटिंग क्लब और सालाना ब्यूटी परेड वगैरह भी होते थे। बस, कुछ ऐसा हुआ कि एक दिन चांद को किसी के लिये बरबाद होना पड़ा। यह एक लम्बी कथा है, मगर खुशी की बात यह है कि मैं बड़ी बात को छोटा करना भी जानता हूं।

बात यह हुई कि ब्रह्मा ने आदमी और औरत को बनाया था साथ-साथ मगर उसी वक्त उन्हें एक मजाक सूझ गया। उन्होंने पुरुषों को पृथ्वी पर भेज दिया और स्त्रियों को चंद्रमा पर। इसके बाद बरामदे में सिंहासन डालकर वे उनके क्रिया-कलाप देखने लगे। आदमी ने जंगल काटे, शिकार खेला, जानवरों को साधा और कुएं खोदे। स्त्रियों ने मेंहदी लगाई, दीवारों पर तस्वीरें बनाई और केशों में फूल खोंसे। इसके बाद एक दिन आदमी ब्रह्मा के पास आया और बोला कि मैं उदास रहता हूं। मुझे एक खास किस्म की भूख लगती है। मैं क्या करूं?

ब्रह्मा ने कहा 'तथास्तु' और उसे अन्न दे दिया। थोड़े दिनों बाद स्त्रियां भी गईं और कहने लगीं कि उनके गले में दर्द रहता है, सीने में चुभन उठती है, टांगों पर चींटिया चलती हैं और नींद बहुत आती है।

ब्रह्मा ने कहा 'तथास्तु' और उन्हें ढोलक-मंजीरे थमा दिए।

थोड़ी अवधि बाद आदमी फ़िर आया और बोला कि इसे क्या करूं कि बाजू किसी को पकड़ना चाहते हैं और तबीयत करती है कि किसी का कचूमर निकाला जाए।

ब्रह्मा ने कहा 'तथास्तु' और उसे गदा दे दी।

स्त्रियों का दल एक दिन फ़िर पहुंचा। कहने लगा कि मन नहीं लगता, कलेजे में धुक-धुक होती है, रात को डर लगता है और शाम को किसी की बिना बात याद आती है।

ब्रह्मा ने कहा 'तथास्तु' और उन्हें तुलसी का बिरवा, घी का एक चिराग और ठाकुर जी की मूर्ति दे दी।

आदमी फ़िर पहुंचा कि उसका मन किसी को पाने के लिये निरंतर अकुलाता है, रात को नींद नहीं आती और सुबह को आलस आता है।

ब्रह्मा ने कहा 'तथास्तु' और उसे ज्ञान और पहिया दे दिया।

मगर बात खत्म नहीं हुई । आदमी और औरत दोनों के दल हैड-ऑफ़िस जाते रहे और अपनी-अपनी मांगे पेश करते रहे। ब्रह्मा ने तय किया कि वास्तविक स्थिति का अध्ययन करने के लिए दोनों लोकों का दौरा किया जाए। एक दिन पृथ्वी पर इस तरह गए, जिसे आजकल 'सरप्राइज विजिट' कहते हैं। देखा लोग उदास हैं। खेत पके खड़े हैं मगर कोई काटता नहीं। गाएं दूध से भरी खड़ी हैं, पर कोई दूध दुहनेवाला नहीं। अगर कहीं दूध दुह लिया गया तो उसमें कोई पानी मिलानेवाला नहीं । उन्होंने लोगों को इकट्ठा किया और पूछा कि बताओ, अब क्या चाहते हो?

मैकू ने बुद्धू को देखा और मुस्कराया।

बुद्धू ने चंदू की तरफ़ ऑख मारी और सिर झुका लिया। एक नौजवान ने पीछे से आवाज़ बदलकर कहा कि बाबा, हमें पतुरिया चाहिए। उसके बिना हमारा काम नहीं चलेगा।

ब्रह्मा जी प्रसन्न हो गए। थोड़ी देर बाद आने का वचन दिया और पहुंच गए चंद्रलोक। देखा कि स्थिति वहां भी नाज़ुक है। लड़कियों ने केश बढ़ा लिए हैं, रोते-रोते होंठ लाल कर लिए हैं और स्वर बारीक हो गया है। उन्होंने पूछा कि तुम्हें किस बात का कष्ट है, साफ़-साफ़ कहो। तीज, त्योहार, संगीत, ठाकुर जी और मेरे-जैसे पिता के अतिरिक्त तुम्हें और क्या चाहिए?

सब चुप रहीं।

ब्रह्मा ने प्रश्न दुहराया तो एक अल्हड़ लड़की दो अदद आंखें मटकाकर बोली कि हमने तो बहुत समझाया पर यह रामरती है न, यह कहती है कि बिना खसम के एक पल नहीं रह सकती।

सब खिलखिलाकर हंस पड़ी।

ब्रह्मा बड़े प्रसन्न हुए। अब उनके बिना भी सृष्टिचल सकती थी। उन्होंने लंगोट कसा और एक-एक लड़की को बालों से पकड़-पकड़ पृथ्वी की ओर फेंकना प्रारम्भ किया। बाल खींचने के कारण कुछ लड़कियों की गर्दन सुराहीदार हो गई। सारी-की सारी लड़कियां पृथ्वी पर सिर के बल गिरीं और इसका परिणाम यह रहा कि उनकी बुद्धि मोटी हो गई। फेंकने के कारण लड़कियों की जुबान जो उनके मुंह से बाहर निकली, वह आज तक उसी स्थिति में है। कमर पर चोट आई और छातियां आगे निकल आईं। गिरने की इस क्रिया में जो स्त्रियां बदसूरत हो गईं वे बाद में चलकर पतिव्रता कहलाईं।

इसके बाद क्या हुआ, यह बताने की जरूरत नहीं।

एक लड़की चांद पर ऐसी भी थी जिसने पृथ्वी पर आने से इनकार कर दिया। ब्रह्मा ने पूछा कि हे बालिके, तू क्यों नहीं जाती? क्या तुझे पुरुष की कामना नहीं है?

लड़की चुप।

ब्रह्मा बोले-अच्छा आ, तुझे दो पतियों का सुख मिलेगा।

लड़की फ़िर भी चुप।

ब्रह्मा ने बतौर रिश्वत के तीन पति और दे दिए। लड़की ने आंसू पोंछे और कहा कि मैं एक वरदान मांगती हूं, मना मत करना। मैं यह बरदाश्त नहीं कर सकती कि मेरी इस झोंपड़ी में मेरे बाद कोई और लड़की रहे, इन नदियों और उपवनों में कोई और स्त्री विहार करे या मेरे झूले और गुड़ियों का कोई और उपयोग करे। मुंह नोच लूंगी उसका। इन वस्तुओं को आप हमेशा-हमेशा के लिये नष्ट कर दीजिए।

ब्रह्मा लड़की की ईर्ष्या को समझ गए। उन्होंने तथास्तु कहा और चंद्रमा को वीरान कर दिया। वहां की सुगंधित हवा को लड़की की सांसों में भर दिया, वहां के अमृत को उसके होठों पर लगा दिया और चांद का मुंह हमेशा के लिये टेढा कर दिया। इस कार्यक्रम के सम्पन्न होने के बाद उन्होंने कमर पर लात मार उस छोकरी का लदान नीचे की दिशा में किया। पदाघात के कारण लड़की की कमर पतली और नितंब भारी हो गए और आंखें फ़ैलाकर कानों तक पहुंच गईं। पृथ्वी पर आकर वह लड़की गजगामिनी तथा मृगनयनी कहलाई। पृथ्वी पर आते ही उसे अपने पांचों पति प्राप्त हो गए। वह कुलवंती उन सबके यहां रहने लगी। वक्त-बेवक्त ऊपर को देखती और कहती कि मुझे तंग मत करना। वह जो चांद है, वह मेरे बाप का घर है। मेरा बाप राजा है और मेरे भाई राजकुमार। मेरे यहां सोने के महल हैं और चांदी के घोड़े। हाय राम, मैं यहां कंगालों में कहां आ पड़ी। अगर ज़रा भी चूं-चपड़ की तो मैं मैके चली जाऊंगी। हां!

और वे पांचो मूर्ख उसकी बात सच समझते रहे और उसकी सेवा यथाशक्ति करते रहे।

भगवान ने जैसा सुख उस लड़की को दिया, वैसा सब किसी को दे।

छत्तीसगढ़ में सलवा जुडूम फिर से लौट आया है

आप को याद होगा की आज से बारह साल पहले छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार ने आदिवासियों की ज़मीन छीनने के लिए उनके गांवों को जलाया था

भाजपा सरकार ने आदिवासियों के साढ़े छह सौ गांवों को जला दिया था

सैंकड़ों महिलाओं के साथ विशेष पुलिस अधिकारियों, पुलिस वालों और सुरक्षा बलों ने बलात्कार किये थे,

सर्वोच्च न्यायालय ने इसे गैर संवैधानिक और अमानवीय करार दिया था और छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार को इसे तुरंत बंद करने का आदेश दिया था,

लेकिन केंद्र में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा सरकार बनने के बाद से छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार के मन से कानून का डर ख़त्म हो गया है,

पिछले कुछ महीनों से छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार के आदेश पर पुलिस और सुरक्षा बल आदिवासियों के गांवों पर ताज़ा हमले कर रहे हैं,

घाड़ली, ताड़मेटला, बुरकापाल और आसपास के कई गांवों में जाकर आदिवसियों के धान और महुआ की टोकरियों को कुल्हाड़ी मार कर फाड़ दिया जा रहा है

फायरिंग करके आदिवासियों की गायों और बकरियों को जंगलों में भगा दिया जा रहा है

आदिवासियों को पकड़ कर हफ्ते हफ्ते के लिए पुलिस और सीआरपीएफ कैम्पों में रखा जा रहा है और वहाँ उनसे जंगल साफ़ करवाने, लकड़ियां काट कर जमा करवाने और सफाई के काम में लगाया जा रहा है,

यह हमारे समय का सबसे भयानक दौर है कि भारतीय नागरिकों के खिलाफ हम अपनी सशस्त्र सेनाओं का इस्तेमाल कर रहे हैं ताकि कुछ बदमाश पूंजीपति इस देश के नागरिकों की ज़मीनें छीन कर और भी ज़्यादा अमीर बन जाएँ, अगर हम सब इसे चुपचाप देखते रहते हैं, और यह होने देते हैं, तो सरकारों की हिम्मत बढ़ती जाएगी, और वह हमारे साथ भी कानून को कुचल कर ऐसा ही बर्ताव करने में बिलकुल भी नहीं डरेगी।

गांवों में जाकर आदिवासी महिलाओं को पीटा गया है और कहा गया है कि गांव खाली करके भाग जाओ नहीं तो इस बार तुम्हारे बच्चों की गर्दन काट देंगे

आदिवासी घबरा कर आंध्र प्रदेश पलायन कर रहे हैं

बुरकापाल गांव के चालीस से ज़्यादा पुरुषों को जेल में डाल दिया गया है

पिछले हफ्ते सुकमा ज़िले के गोरका गांव में गांव खाली ना करने पर सोलह युवाओं को जेल में डालने की धमकी दी गई,

वे आदिवासी युवा सोनी सोरी के पास कानूनी मदद मांगने के लिए आये,

सोनी सोरी ने इसकी सूचना अदालत को दी और पुलिस को चुनौती दी कि अगर पुलिस के पास इन युवकों के खिलाफ कोई वारंट है तो आकर पकड़ ले,

लेकिन तब से पुलिस खामोश बैठी हुई है,

आदिवासी पूरे साहस और ईमानदारी के साथ कानूनी रास्ते से सरकारी हमलों का सामना कर रहे हैं,

लेकिन सरकार गुंडागर्दी के दम पर आदिवासियों को डरा कर उनकी ज़मीनें खाली करवाना चाहती है,

यह हमारे समय का सबसे भयानक दौर है कि भारतीय नागरिकों के खिलाफ हम अपनी सशस्त्र सेनाओं का इस्तेमाल कर रहे हैं ताकि कुछ बदमाश पूंजीपति इस देश के नागरिकों की ज़मीनें छीन कर और भी ज़्यादा अमीर बन जाएँ,

अगर हम सब इसे चुपचाप देखते रहते हैं, और यह होने देते हैं, तो सरकारों की हिम्मत बढ़ती जाएगी, और वह हमारे साथ भी कानून को कुचल कर ऐसा ही बर्ताव करने में बिलकुल भी नहीं डरेगी।

- हिमांशु कुमार

सम्पादक के नाम

वाइ.सी.मोदी का अच्छा लेकिन अधूरा परिचय दिया

मज़दूर मोर्चा में एनआईए के नये चीफ़ का परिचय पढा। बहुत अच्छा लगा कि ऐसा परिचय देने वाले पत्रकार अभी हैं। लगे हाथ अपने पाठकों को यह भी तो बतायें कि तत्कालीन गृह मन्त्री हरेन पांड्या की हत्या से करीब डेढ माह पूर्व संघ परिवार के ही एक गुंडे बाबू बजरंगी पर हमला हुआ था। इसमें देसी कट्टों का इस्तेमाल किया गया था। इस पर पुलिस ने आईपीसी की धारा 307 के तहत एक मुकदमा दर्ज करके ठंडे बस्ते में रख छोड़ा था।

हरेन पांड्या की हत्या होने के तुरंत बाद नरेन्द्र मोदी व अमित शाह के वफ़ादार डीआईजी वनजारा ने तुरंत बाबू बजरंगी के हमलावरों को खोज निकाला, उनसे देसी तमंचे बरामद करने के साथ-साथ हरेन पांड्या की हत्या भी उन्हीं से स्वीकार करा दी। ऐसे में बाबू बजरंगी व हरेन पांड्या के दो अलग-अलग केसों को एक (क्लब) कर दिया गया तथा दोनों केसों में उन्हीं को पेश कर दिया गया। इन आरोपियों के अलावा हत्या में कुछ ऐसे घोषित आतंकवादी नाम भी जोड़ दिये गये थे जो कभी पकड़े जाने की सम्भावना नहीं थी और वे पकड़े भी नहीं गये।

परिणामस्वरूप बाबू बजरंगी के केस में तो उक्त आरोपी को सजा हो गई लेकिन पांड्या की हत्या वाले केस में बरी हो गये। बरी तो होने ही थे क्योंकि वे उस हत्या में शामिल नहीं थे और इसी लिये उनके विरुद्ध कोई ठोस गवाहियां भी कोर्ट में नहीं हो पाईं। वनजारा की इस तफ़्तीश पर सवाल उठने तो जरूरी थे सो वे उठे भी। पांड्या के परिजनों ने सीबीआई जांच की मांग की तो योगेश चन्द्र के नेतृत्व में जांच टीम बन कर दिल्ली से गुजरात पहुंच गयी। इस टीम ने भी नये सिरे से तफ़्तीश करने की बजाय वनजारा की तफ़्तीश पर ही मुहर लगा कर मुख्यमंत्री मोदी को बड़ी राहत प्रदान कर दी।

1990 के दशक में नरेन्द्र मोदी को तड़ी पार किसी अदालत या पुलिस ने नहीं किया था, बल्कि तत्कालीन गुजरात मुख्यमंत्री केशु भाई पटेल ने इनकी हरकतों से तंग आकर, पार्टी हाई कमान से कह कर इन्हें गुजरात से बाहर निकलवाया था। 26 जनवरी 2001 को सूरत में आये भूकम्प के दौरान मुख्यमंत्री केशु भाई कुछ कमज़ोर पड़े तो नरेन्द्र मोदी जी पुन: गुजरात में घुसने में न केवल कामयाब हो गये बल्कि मुख्यमंत्री की कुर्सी भी झपट ली। इसके बाद ही इन्होंने हरेन पांड्या सहित सभी से हिसाब निपटाने शुरू कर दिये।

- चिम्मन भाई पटेल
सूरत, गुजरात